भक्तों का कायापलट करानेवाली कार्यशाला
ओम सद्गुरु प्रतिष्ठान

-अमोल पेडणेकर

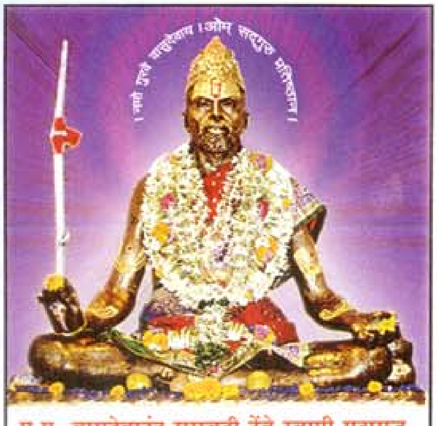

प.प. वासुदेवानंद सरस्वती टेंबे स्वामी महाराज

'ओम सद्गुरु प्रतिष्ठान' के बोरिवली के 'स्थान' पर धूप, अगरबत्ती तथा फूलों की हल्की सी सुगंध से हम मंगलमय वायुमंडल अनुभव करते हैं। नामजप एवं आरती के सुरों से समूचे वायुमंडल में प्रसन्नता छाई हुई होती है। इन सारी बातों को अनुभव करते हुए मन एवं दृष्टि से धीरे-धीरे नवचैतन्य का आनंद लूटते चलते हैं। इस अहाते को चैतन्य प्राप्त करा देनेवाले तथा अनगिनत भक्तों का श्रद्धास्थान बने हुए प.पू. सद्गुरु बापट गुरुजी के दर्शन करना, एक असीम आनंद देनेवाला क्षण होता है।

कोई साधारण आदमी हो, सत्ताधीश हो या उद्योगपति हो, उनमें से हर एक को अपने जीवन में कठिन प्रसंगों का सामना करना ही होता है। कठिन प्रसंगों से गुजरनेवालों को सद्गुरु द्वारा ही उचित मार्गदर्शन मिलता है। ऐसे भक्तों को निर्भय बनाकर उनके मनोबल को क्रियाशीलता की दृष्टि से बढ़ाकर श्रद्धा का वायुमंडल निर्माण करने का महान कार्य 'ओम सद्गुरु प्रतिष्ठान' के माध्यम से दौलतनगर, बोरिवली (पूर्व) के पवित्र स्थान पर परम पूजनीय सद्गुरु बापट गुरुजी कर रहे हैं।

आज कई सालो से प.पू. सद्गुरु बापट गुरुजी अपने भक्तों से निरंतर सदविचार वितरित कर रहे हैं। प्रतिष्ठान में आने वाले भक्त वैचारिक दृष्टि से सुदृढ़ बनें, इस हेतु समाजाभिमुख होते हुए भी अध्यात्मिक एवं विज्ञानाधिष्ठित विचार उन सभी तक पहुँचे इसलिए प.पू. सद्गुरु बापट गुरुजी निरंतर बेचैन रहते हैं।

प. प. सद्गुरू बापट गुरूजी

'ओम सद्गुरु प्रतिष्ठान' के बोरीवली स्थान पर धूप, अगरबत्ती तथा फूलों की हल्की सी सुगंध से हम मंगलमय वायुमंडल अनुभव करते है। नामजप एवं आरती के सुरों से समूचे वायुमंडल में प्रसन्नता छाई हुई होती है। सभी प्रकार के भक्तगणों की उपस्थिति से भरा हुआ अहाता तथा विशेष रूप से यहाँ नामस्मरण करनेवाली युवा पीढ़ी को देखकर सुखद आश्चर्य की अनुभूति मिलती है। फिर भी आज के जमाने में विज्ञान के सहारे आगे बढ रही युवा पीढी भी चमत्कारों के सामने न झुकते, सोच-विचार कर ही मन:शांति हेतु संत-महंतों के निवास से पवित्र बने हुए स्थान की ओर मुड़ने लगी है। इसे शुभ लक्षण ही मानना चाहिए। इन सारी बातों को अनुभव करते हुए मन एवं दृष्टि से धीरे धीरे नवचैतन्य का आनंद लूटते चलते हैं। इस अहाते को चैतन्य प्राप्त करा देने वाले तथा अनगिनत भक्तों का श्रद्धास्थान बने हुए प.पू. सदुगुरु बापट गुरुजी के दर्शन करना एक असीम आनंद देनेवाला क्षण होता है।

अंगकांति गौर एवं मोहक, छरहरा कद, फिर भी तेजस्वी व्यक्तित्व! सुगम-सरल प्रवाही भाषा! किसी भी विचार को प्रकट करते समय

ख्वाजा गरीब नवाज अजमेर शरीफ को पवित्र चद्दर अर्पण करते हुए।

सामुदायिक व्रतबंध (मौंजी बंधन - गायत्री मंत्र दिक्षा प्रदान)

आपकी बेचैनी महसूस होती है। छोटे छोटे अनुभव, प्रसंग, घटना, दृष्टान्त इत्यादि का प.पू. सद्गुरु को जो अनुभव है, उन प्रसंगों का वर्णन बडे प्रभावशाली ढंग से करने से आपका प्रवचन महज पसंद आनेवाला न होकर समय की माँग के अनुसार मार्गदर्शक साबित होता है। किसी संकट से उबरने हेतु आप भक्त को भक्तिमार्ग द्वारा आत्मिक शक्ति प्राप्त करा देते हैं। ऐसे अवसर पर प.पू. गुरुजी का दृष्टिकोण सकारात्मक होता है, तभी तो हजारों की संख्या में भक्तगणो का आपके चरणों में माथा हैं।

किसी भी तरह का आडम्बर न करते हुए धार्मिक एवं आध्यात्मिक मार्ग का अवलम्ब करते समाजसेवा करने का व्रत प.पू. गुरुजी ने स्वीकार किया है। ओम सद्गुरु प्रतिष्ठान यह प. पू. वासुदेवानंद सरस्वती टेंबे स्वामी महाराज का निवासस्थान है, ऐसा प.पू. गुरुजी कहते हैं। इस कारण यह मंदिर न होकर 'स्थान' है तथा इस स्थान पर, उसके आसपास और समूचे वायुमंडल में साक्षात टेंबे स्वामी महाराज जी का साक्षात विहार होता हैं, ऐसी सभी भक्तों की धारणा एवं विश्वास है।

आरती, नामस्मरण एवं प्रवचन इत्यादि यहां होने वाले मुख्य कार्यक्रम हैं। अपने जीवन में आनेवाली समस्या को सुलझाने के लिए आवश्यक होनेवाली आत्मशक्ति ईश्वर की सुयोग्य आराधना द्वारा प्राप्त की जा सकती है। रज-तम

सूफी हजरतशा (ससाणे महाराज और सूफी हजरत रफीकुल हसन (खान बाबा) पुष्कर में यज्ञसन्मुख गुरवार की आरती करते हुए।

गुणों का त्याग करते हुए जीवन में संतोष देनेवाले प्रत्ययकारी आनंद की अनुभूति किसी को भी मिल सकती है।

इस 'स्थान' पर जो कुछ निरुपित किया जाता है, उसके माध्यम से समाज में रहते अपना व्यवहार कैसा हो, एक-दूसरे के सुख-दुख में समरस कैसे हों, जीवन में कर्तव्यपालन का कितना महत्त्व है, दृढ़श्रद्धा कैसी होनी चाहिए आदि अनेक विषयों को लेकर भक्त मार्गदर्शन तो पाता ही है, उसके साथ ही इन बातों को प्रत्यक्ष व्यवहार में लाने का अवसर भी विभिन्न घटनाओं द्वारा मिलता है। समुचित रूप में संस्कारों का पालन करनेवाले भक्तों को मिलनेवाला आनंद स्वाभाविक रूप में ही सभी अनुभव करते हैं तथा इन संस्कारों के अनुरूप अपना भी बर्ताव हो, ऐसी इच्छा अन्य भक्तों के मन में जागृत होती है। इस संस्कार केंद्र पर मनःशुद्धि, कर्मशुद्धि एवं अर्थशुद्धि आदि को लेकर मार्गदर्शन करने का प.पू. बापट गुरुजी निरंतर प्रयास करते रहते हैं।

परमपूज्य सद्गुरू भाऊमहाराज करंदीकर

प्रतिष्ठान के कार्य को देखकर ऐसा कहा जा सकता है, कि यह भक्तों में समुचित परिवर्तन लानेवाली कार्यशाला है - 'ओम् सद्गुरु प्रतिष्ठान । इस कार्यशाला का शुल्क मान श्रद्धा, नियम, यानी सत्य और निरंतरता तथा घोषवाक्य माने नामस्मरण होता है। 'ओम सद्गुरु प्रतिष्ठान' के भक्त सिर्फ मुंबई में ही नहीं, बल्कि सारे भारत में फैले हुए हैं। इसके अतिरिक्त अफ्रीका मध्यपूर्व के देश, इंग्लैड, यूरोप आदि विदेशों तक भी प.प. वासुदेवानंद सरस्वती टेंबे स्वामी महाराज के जीवनकार्य दर्शन को प्रतिष्ठान ने पहुँचाया है। प. पू. बापट गुरुजी के भक्तगण चारों और फैला हुए हैं।

आरती, नामस्मरण एवं प्रवचन के द्वारा आदमी की प्रधान समस्याओं का निराकरण करनेवाले 'ओम् सद्गुरु प्रतिष्ठान' के 'स्थान' पर आरती और उसके पश्चात् होनेवाले प.पू. सद्गुरु बापट गुरुजी के प्रवचन से उपस्थित भक्तों को जो अनोखा संतोष एवं मनःशांति प्राप्त होती है, उसे तो कोई स्वयं ही अनुभव कर सकता है।

सामुदायिक श्रीसत्यदत्त पूजा

चिदंबर महास्वामी कलशारोहण समारोह मे संत महंतो के साथ

मंत्र के उच्चारण मे कोई भेद नहीं।

'चिदंबर सेवा समिति', अहमदनगर द्वारा आयोजित शिव अवतार चिदंबर महास्वामी (कर्नाटक) की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा एवं कलशारोहण समारोह के अवसर पर 'प.पू. श्री सद्‌गुरु वासुदेव बापट गुरुजी द्वारा 'सामाजिक समता' विषय पर उद्‌बोधन–

चिदंबर दीक्षित महास्वामी महाराज एक महान आध्यात्मिक विभूति थे। समाज के आत्मिक विकास की दृष्टि से आज चिदंबर दीक्षित महास्वामी महाराज के जीवनकार्य का हर एक को परिचय होना चाहिए। सन १७५८ ई. के लगभग कर्नाटक में जन्में स्वामीजी ने अपने ५७ वर्ष के जीवनकाल में प्रचंड आध्यात्मिक कार्य की नींव डाली। 'साक्षात् शिव अवतार' रूप में आप का किया जाता है। भेदाभेद रहित ईश्वर भक्ति आप के अध्यात्म का मूल सूत्र था। मंत्र सामर्थ्य के माध्यम द्वारा व्यक्ति और समाज शक्तिशाली बने, इस हेतु चिदंबर स्वामीजी ने मौलिक स्वरूप का कार्य किया है।

मंत्र के उच्चारण से प्रचंड शक्ति निर्माण होती है। अद्‌भुत मंत्र के उच्चारण द्वारा हमें उसमें निहित सामर्थ्य प्राप्त करना चाहिए। मंत्रों का उच्चारण श्रद्धापूर्वक अगर किया जाए, तो उसका उचित परिणाम तो होगा ही। इस मंत्र पठन में किसी भी प्रकार का भेदाभेद नहीं होता। फलाने मंत्र का कोई एक ही पठन कर सकता है, मंत्रों का पठन करने का अधिकार उच्चवर्णियों को ही केवल है, इस कोटि का कोई भेद मंत्र पठन में नहीं होता। स्वयं अपना उद्धार करने की प्रबल इच्छा रखनेवाले किसी को भी प्रयास करने में कोई आपत्ति नहीं। अन्य कोई भी बन्धन हमें मंत्र पठन से खुद का उद्धार करने से रोक नहीं सकता। कोई कहे, कि महिलाओं को फलाने मंत्र का पठन नहीं करना चाहिए, विशिष्ट जाति-पंथ के लोग मंत्र पठन न करें, तो यह सरासर गलत है। मंत्र उच्चारण में वंश, जाति, लिंग अथवा अन्य किसी भी प्रकार का भेद नहीं होता। जिस क्षण महर्षि नारद ने वाल्या मछुआ को मंत्र दिया और वाल्या का वाल्मीकि में परिवर्तन हुआ, तभी से संसार को इस तथ्य का भान होना चाहिए, कि हर किसी को अपना उद्धार करने का अधिकार है। जिस क्षण संत ज्ञानेश्वर ने भैंसे से वेद पठन करवाया, उस क्षण का अर्थ यही है, कि विश्वभर के हर किसी जीवधारी को मंत्र उच्चारण का अधिकार प्राप्त है। अपने स्वयं के बारे में न्यूनगंड धारण करके अथवा गलत सामाजिक रिवाजों का बोझ कंधों पर उठाए तुम अगर पिछड़ रहे हो, तो वह तुम्हारी अपनी भूल है। इन्सान होने से अपना उद्धार करने का तुम्हें जो अधिकार प्राप्त है, तो उस पर जरूर अमल करो। चिदंबर महास्वामीजी के तत्त्वज्ञान में ये सभी न्यूनगंड डालने का उपदेश है। आपके जीवनपट की ओर नजर डालें, तो दिखाई देता है, कि सभी जातियों के लोग आपके शिष्य थे। प्राचीन ऋषि-मुनियों को मंत्र शक्ति की महिमा जो ज्ञात हुई थी, उस समूची शक्ति को चिदंबर महास्वामीजी ने आत्मसात करते हुए विद्यमान समाज के समक्ष रखा।

वास्तव में मंत्रों के उच्चारण मात्र से ही शक्ति निर्माण होती है। इसके लिए मंत्र का अर्थ पूरी तरह मालूम होना आवश्यक ही है, ऐसा कुछ नहीं। जिन किन्हीं को संस्कृत का ज्ञान नहीं होता, वे अगर मंत्र का श्रद्धासहित केवल उच्चारण करें, तो भी उस मंत्र द्वारा शक्ति निर्माण होती है। ऐसे प्रभावी मंत्रों की रचना समूची मानव जाति के कल्याण हेतु की गई है।

ॐ सहनाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वीनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।
ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः ।।

यह मंत्र साफ-साफ कह देता है, कि, ''सभी एकत्रित हो जाओ, सांघिक पठन करो, इकठ्ठा होकर साधना करो, सहभोजन करो तथा समाज में से विषमता को हटाओ।'' सामुदायिक मंत्रपठन जब होता है, तब सभी कल्मष दूर हो जाते हैं। उसी कारण मुझे हिंदू धर्म और हिंदू दर्शनों का अभिमान हैं। 'इस दर्शन के आधार पर मैं यह साधना करूँगा।' इस सूत्र को मन में धारण करते हुए सभी जाति, पंथ और लिंग के व्यक्ति नामस्मरण, मंत्रपठन करें तथा उसमें से प्राप्त होनेवाली असाधारण ऊर्जा को अनुभव करें।

'समाज की धारणा करता है, वह धर्म' इस प्रकार धर्म की सीधी सरल परिभाषा मनु ने की है। उधर महर्षि कणाद ने धर्म की परिभाषा बताते हुए कहा है, ''धर्म वही है, जिसके आचरण द्वारा मनुष्य अपना आत्मिक एवं प्रापंचिक सफलतापूर्वक कर सकता है।'' इसलिए अपना आत्मिक एवं प्रापंचिक उद्धार करने और जप, मंत्र, यज्ञ आदि के साथ खुद को जो भी कुछ आध्यात्मिक तत्त्व भाएगा, उसके आधार पर आरंभ करें। समूची सृष्टि विषमता की ओर से समता की ओर आगे बढ़ रही है। विश्व में जिस क्षण समता पूर्ण रूप से प्रस्थापित होगी, उस क्षण हर एक व्यक्ति मोक्ष के प्रति पहुँचा हुआ होगा। विषमता का जहाँ निर्देश तक न होगा, ऐसे समाज तक पहुँचने का हम प्रयास करेंगे। समाजजीवन को जाति, पंथ भेदों से मुक्त करने में अपना योगदान देंगे। जहाँ कहीं समता है, वहाँ मोक्ष है। इस समता की दिशा में अग्रसर होते समय हमें विषमता के इस भाव को अपने मन से, समाज से, आचरण से निग्रह करते हुए तथा अभ्यासपूर्वक हटा देना संभव होना चाहिए। प्रपंच एवं परमार्थ को साथ-साथ निभाते हुए समता की आराधना करने की क्षमता हममें होनी चाहिए। आध्यात्मिक प्रगति के साथ ही सामाजिक प्रगति करने के लिए ही यह मानव जन्म हमें प्राप्त हुआ है, इसका खयाल रखें।

अध्यात्म मार्ग पर आगे बढ़ते समय हमारे लिए केवल 'चिदंबर महास्वामी महाराज की जय' ऐसा कहना पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि आपने अपने जीवन मार्ग में समता का दिया हुआ उपदेश अपने नामस्मरण द्वारा, जपमंत्र द्वारा, उसके पठन द्वारा प्रकट होना चाहिए। उसका उपयोग स्वयं अपने तथा समाज के उद्धार हेतु हम कर सकें, इसका हमें आकलन हुआ, तो श्रद्धा एवं विश्वास के आधार पर संपूर्ण आध्यात्मिक शरणागत भाव हमारे अंदर निर्माण होगा और उसी क्षण मंत्र का प्रत्यय अपने जीवन में कर पाएँगे।

सद्‌गुरु भाऊ महाराज करंदीकर

परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमद् वासुदेवानंद सरस्वती स्वामी महाराज लोकोत्तर अधिकारी महापुरुष दत्त संप्रदाय प्रत्येक भक्त के लिए वरेण्य हैं। श्रीमद् आद्य शंकराचार्य के समान ही आपने अपने जीवनभर संपूर्ण भरतखंड में पदभ्रमण करते हुए आचार एवं विचार धर्म का प्रसार किया तथा जनमानस को स्पर्श करते श्री दत्तभक्ति का

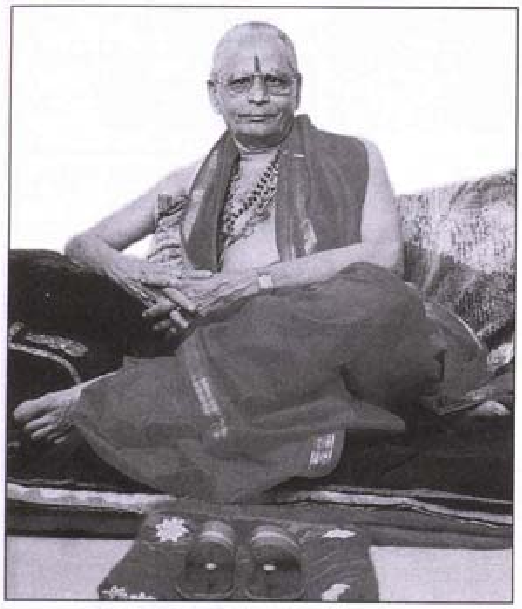

प्रसार किया। समूचा दत्त संप्रदाय आप को बड़े अपनापे से 'श्री थोरले स्वामी महाराज' कहता है।

'ओम् सद्‌गुरु प्रतिष्ठान' के संस्थापक श्री नीलकंठ अनंत उपाख्य भाऊ महाराज करंदीकरजी ने परमपूज्य दादा महाराज निंबालकर तथा अध्यात्म क्षेत्र से अन्य मान्यवर आदि के मार्गदर्शन से एवं अंतस्थ प्रेरणा से 'श्री थोरले स्वामी महाराज' को गुरु माना और अपने सद्‌गुरु का कार्य, आपका जीवन एवं विचार आदि का प्रचार हमें करना है, इसी एक लगन से अपना उर्वरित जीवन व्यतीत किया।

अथक परिश्रम के पश्चात श्री थोरले स्वामी महाराज के शिष्यों में से एक परमपूज्य श्री नाना महाराज तराणेकर (इंदौर) की उपस्थिति और आशीर्वाद के साथ बोरिवली में ११ फरवरी १९८४ के दिन आपने 'श्री थोरले स्वामी महाराज' का पादुकास्थान निर्माण किया। उसी प्रकार पंचधातु की बनी मूर्ति की खोपोली में दि. १ दिसंबर १९९० के दिन स्थापना की।

आध्यात्मिक कार्य के साथ ही वैद्यकीय सेवा, आदिवासी शिक्षा संस्था को अनाज के रूप में सहायता छात्रों का सम्मान, पुस्तकें, गणवेश आदि के रूप में सहायता आदि समाजोपयोगी उपक्रम आरंभ किये।

सारे समाज के कल्याण हेतु सद्‌गुरु भाऊ महाराज ने सन २००२ ईसा में प.पू. वासुदेवानंद सरस्वती स्वामी महाराज के १५० वीं जयंती के उपलक्ष्य में १५१ करोड़ 'नमो गुरवे वासुदेवाय' नाम का नामजप और १५१ भक्तों के निवासस्थानों में तीन घंटे का नामस्मरण आदि संकल्प किये थे। इस संकल्प की पूर्ति के पूर्व ही सदगुरु भाऊ महाराज का अकल्पित बीमारी से दि. ८ मार्च २००४ को महानिर्वाण हुआ।

सद्‌गुरु प.पू. बापट गुरुजी

सदगुरु भाऊ महाराज करंदीकरजी की इच्छा के अनुसार सदगुरु प.पू. वासुदेव वामन बापट गुरुजी ने 'श्री थोरले स्वामी महाराज' का उत्तरदायित्व स्वीकार किया और अक्टूबर २००४ से प.पू. गुरुजी 'ओम् सद्‌गुरु प्रतिष्ठान के बोरिवली और खोपोली के स्थानों पर श्री थोरले स्वामी महाराज के आसन का उत्तरदायित्व निभा रहे हैं।

'ओम सदगुरु प्रतिष्ठान' के पहले से क्रियान्वित हो रहे उपक्रमों के अतिरिक्त सदगुरु प.पू. बापट गुरुजी ने और कुछ नये उपक्रम आरंभ किये हैं। विशेष रूप से बालसंस्कार वर्ग, वैद्यकीय चिकित्सा, सत्संग भक्ति संमेलन, सामूहिक मौंजी बंधन, सामूहिक १०८ श्री दत्तपूजा, शैक्षणिक दत्तक योजना आदि उपक्रमों का उसमें समावेश है।

दि. २४ से २६ अगस्त २००८ के दरमियान खोपोली स्थान पर 'सामूहिक १०८ श्री सत्यदत्त पूजा' उपक्रम का औचित्य देखकर प.पू. गुरुजी ने लगातार तीन दिन 'श्री थोरले स्वामी महाराज' विरचित 'अघोर कष्टोद्धारण स्तोत्र' को लेकर छह बैठकों में विवेचन किया था। इस पूरे विवेचन पर आधारित पुस्तक श्री दत्तजयंती के शुभ अवसर पर प्रतिष्ठान ने प्रकाशित की है।

सदगुरु भाऊ महाराजी ने १५१ करोड़ नामजप संपन्न करवाया और १५१ भक्तों के निवासस्थानों में नामस्मरण आदि संकल्प जनवरी २००९ में सदगुरु प.पू. बापट गुरुजी के मार्गदर्शन में संपन्न हुए।

परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमद वासुदेवानंद सरस्वती स्वामी

महाराजजी की पुण्यतिथि २०१४ साल में संपन्न हो रही है। इसै उपलक्ष में १०१ कोटी 'नमो गुरवे वासुदेवाय' नामजप प. पू. टेंबे स्वामी महाराजजी के जन्मशताब्दी समारोह वर्ष में पूरा करने का संकल्प सद्‌गुरु प.पू. बापट गुरुजी ने विजयादशमी २००९ में किया है।

संकल्पपूर्ति के उपलक्ष्य में तथा बोरिवली स्थान में प.पू. वासुदेवानंद स्वामी महाराज की पादुका स्थापना के रजतमहोत्सवी वर्धापन दिन पर खोपोली से बोरिवली तक पालकी पदयात्रा का कार्यक्रम आयोजित किया। इसके पूर्व बोरिवली से खोपोली तीन बार पदयात्रा का कार्यक्रम संपन्न हुआ था। इस समय खोपोली स्थान से बोरिवली स्थान में शक्ति का आगमन हुआ है। इसी उद्देश्य से पदयात्रा का आयोजन किया जाता है और सभी भक्त उससे लाभान्वित होते हैं।

ओम सद्गुरु प्रतिष्ठान के विविध उपक्रम

शैक्षणिक उपक्रम

१) बोरिवली में बालसंस्कार वर्ग

२) ओम सद्गुरु प्रतिष्ठान और प्रकाश ज्ञान शक्ति केंद्र, बदलापुर-संयुक्त शैक्षणिक दत्तक योजना

३) वनवासी आश्रम, जांभिवली-कर्जत संस्था को शैक्षणिक सहायता

४) निर्धन परिवारों के बच्चों को शैक्षणिक सहायता

वैद्यकीय उपक्रम

सद्गुरु भाऊ महाराज स्वास्थ्य सेवा योजना के अंतर्गत

१) नि:शुल्क वैद्यकीय शिविर

२) वैद्यकीय सहायता

३) रुग्णवाहिका सेवा

४) वैद्यकीय चिकित्सा

सामाजिक उपक्रम

१) वनवासी आश्रम, जांभिवली-कर्जत संस्था को अनाज की पूर्ति

२) खोपोली में सामूहिक व्रतबंध का उपक्रम आयोजित किया जाता है

३) वैदिक मंत्रों द्वारा जन्म पूर्व गर्भ संस्कार यह उपक्रम बदलापुर में होता है

४) बाढ़ पीड़ितों को वस्त्र-पूर्ति

ओम सदगुरु प्रतिष्ठान की आध्यात्मिक पुस्तकें

प.पू. श्री सद्गुरु वासुदेव वामन बापट गुरुजी की ओम् सद्गुरु प्रतिष्ठान बोरिवली एवम् खोपोली स्थानक पर उपस्थिति

१) बोरिवली : हर महीने का पहला और तीसरा गुरुवार
पता : ओम् सद्गुरु प्रतिष्ठान रोड नं. ७, दौलत नगर, बोरिवली (पू), मुंबई. दूरभाष : २८९३९८६३

२) खोपोली : हर महीने का अंतिम गुरुवार के बाद आनेवाला शनिवार और रविवार
पता : ओम् सद्गुरु प्रतिष्ठान प.प. वासुदेवानंद सरस्वती टेंबे स्वामी महाराज मार्ग, न्यू टाऊनशिप, मोगलवाडी, खोपोली.
दूरभाष : ०२१९२-२६२०४०

३) बदलापुर : हर महीने का दूसरा रविवार यज्ञ –
समय सुबह ९ से ५.३०
पता : प्रकाशन ज्ञान शक्तिकेंद्र गायत्री गार्डन, कात्रप रोड, बदलापुर (पू.)

अधिक जानकारी के लिए हमारे वेबसाईट पर जरूर संपर्क करें।
yadnya.in और ospratishthan.org

॥ हनुमान जी का नाम करे कल्याण ॥

जीवन में कैसी भी परेशानियाँ हों, या कितने भी बडे संकट हों, हनुमान जी का ध्यान करने से निश्चित ही लाभ होता है। उसकी विधि इस प्रकार है- विधि उत्तर मुखी लाल आसन बिछाकर पश्चिम, उत्तर व पूर्व में हनुमान जी पर चढ़े सिंदूर से मंगल स्वस्तिक बनायें। उन तीनों स्वस्तिकों पर घी के दीपक मध्य में रखें। तत्पश्चात हनुमान चालीसा का पाठ करते हुए इस तरह हनुमान जी का चिंतन ध्यान प्रारंभ कर दें। हनुमान जी की सच्चे मन से थोड़ी सी आराधना भी हममें नवचेतना का संचार कर देती है क्योंकि भगवान विष्णु, महालक्ष्मीजी और शेषनाग के अवतार श्रीराम, मातेश्वरी सीताजी और लक्ष्मणजी के अनंत सेवक श्री हनुमान जी स्वयं भी आशुतोष भगवान शिवजी का अवतार हैं। यही कारण है कि आप सम्पूर्ण सद्गुणों के असंख्य भण्डार हैं, जबकि दुर्गुण तो आपकी छाया मात्र से भी दूर रहते हैं। भक्तों पर विशेष कृपा करना, नास्तिकों तक को दण्ड न देना और सबको समान भाव से देखना आपका सहज स्वभाव है। थोड़ी सी पूजा-आराधना से ही प्रसन्न होकर भक्त के वश में हो जाना आपकी अद्भुत विशेषता है। पराक्रम, शक्ति और गति में तो आप अद्वितीय हैं ही, प्रखर विद्वत्ता और अटूट क्रियाशीलता में भी आपका जवाब नहीं।

अहंकार का तो प्रश्न ही नहीं, अपने अद्भुत शौर्य और दिव्य कार्यों पर भी हनुमान जी रंचमात्र भी गर्व नहीं करते। वे भगवान श्रीराम के लिए एक से एक महान कार्य करते हैं, परन्तु कहते यही हैं कि 'मैंने क्या किया है, प्रभु यह तो आपकी कृपा का ही प्रसाद है कि वह कार्य सम्पन्न हो गया'। बाल्यकाल में सूर्य का भक्षण, सौ योजन लंबा समुद्र लांघकर आकाश मार्ग से लंका जाना, सीता माता की खोज, अशोक वाटिका में अक्षय कुमार का सेना सहित संहार और लंका दहन जैसे कार्य हनुमान जी ने स्वयं अकेले अपनी शक्ति से किये थे। परन्तु बाद में श्री रामचन्द्र जी और सुग्रीव के समक्ष आप यही कहते रहे कि इन कार्यों में मेरा कोई योगदान नहीं, आपकी शक्ति और देवों की कृपा से ये कार्य सम्पन्न हुए हैं। आपकी विनयशीलता की हद तो यह है कि अहिरावण का पाताल में जाकर वध करने और संजीवनी बूटी के लिये पूरा द्रोणाचल पर्वत उठा लाने के बावजूद आप यही कहते रहे कि 'प्रभु ये सभी कार्य तो वास्तव में आपने किये हैं, मैं तो माध्यम मात्र था'।

दीनदयालु वीर बजरंगबली परम कृपालु हैं, अपने भक्तों के मार्ग के कांटे वे स्वयं अपने कर कमलों से बीनकर हटा देते हैं। बस साधक को तो एक बार उस मार्ग पर बढ़ने का दृढ़ निश्चय कर कदम बढ़ाना होता है। आप एक बार प्रारंभ तो कीजिए केशरीनन्दन की आराधना-उपासना और उनके गुणों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास, हनुमान जी स्वयं इस प्रयास में आपकी सहायता को सहर्ष उपस्थित हो जायेंगे।

- डॉ. प्रेम गुप्ता